नीति, कर्तव्य और सदाचार धर्म के आधार; राजधर्म,प्रजाधर्म का पालन आवश्यक

धर्म के अनुशासन के बिना राज व्यवस्था शून्य और अराजक

चतुर्थ धर्म-धम्म सम्मेलन के समापन में माननीय राज्यपाल ने की धर्म और राजनीति की सारगर्भित व्याख्या

धर्म का मूल उद्देश्य मानव का मंगल है और राजव्यवस्था का उद्देश्य नागरिकों का मंगल है और व्यवस्था धर्म की धुरी पर टिकी हो तो स्थिर एवं कल्याणकारी होती है। सांची विश्वविद्यालय के द्विवार्षिक आयोजन धर्म-धम्म सम्मेलन के समापन समारोह की अध्यक्षता करते हुए मध्य प्रदेश के राज्यपाल माननीय प्रो. ओपी कोहली ने ये उद्गार व्यक्त किए। उन्होने कहा कि विश्व में कल्याणकारी और उत्पीड़नकारी व्यवस्था चल रही है और उत्पीड़न वाली व्यवस्था धर्म आधारित नहीं है। प्रो. कोहली ने कहा कि **धर्म के अभाव में राजव्यवस्था अराजक और व्यवस्था शून्य** हो जाती है। भगवान कृष्ण ने भी गीता में कहा है कि जब जब अधर्म बढ़ता है तो धर्म की स्थापना के लिए भगवान जन्म लेते है। उन्होने धर्म की सरल परिभाषा देते हुए कहा कि **सदाचार यानि दूसरों के प्रति अच्छा आचरण** ही धर्म है और सदाचार पालन करने वाले नास्तिक होकर भी धर्मात्मा की श्रेणी में आते है। प्रो कोहली ने अपनी बात स्पष्ट करते हुए कहा कि पूरा तंत्र एक दूसरे के प्रति किए जाने वाले कर्तव्यों पर टिका हुआ है और अगर कोई भी कर्तव्यच्युत होता है तो पूरी राजव्यवस्था अस्थिर हो जाएगी। उन्होने गांधीजी के प्रिय भजन वैष्णव जन तो तेने रे कहिए का जिक्र करते हुए कहा कि **दूसरों की पीड़ा समझने वाला ही सच्चे अर्थों में धार्मिक और सदाचारी नागरिक** है। धर्म की परिभाषा को गहन विस्तार देते हुए माननीय राज्यपाल महोदय ने कहा कि राजधर्म और प्रजाधर्म के साथ कर्तव्य पालन ही उपयुक्त विकल्प है क्योंकि सत्ता, दंड और कानून की अपनी सीमाएं है। उन्होने नीति, कर्तव्य और सदाचार को धर्म का सार तत्त्व बताया।

माननीय राज्यपाल महोदय ने सांची विश्वविद्यालय और इंटेक भोपाल चैप्टर के सहयोग से सर जॉन मॉर्शल और अल्फ्रेंड फूचर की पुनर्प्रकाशित किताब द मॉन्यूमेंट्स ऑफ सांची (The Monuments of Sanchi) का भी लोकार्पण किया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि और महाबोधि सोसायटी ऑफ श्रीलंका के प्रमुख बनगला उपतिस्स नायक थैरो ने सांची विश्वविद्यालय की प्रगति पर संतुष्टि जताते हुए कहा कि धर्म को राजनीति का दिशानिर्देशक सिंद्धांत करार दिया।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि और अमेरिकन सोसायटी ऑफ वैदिक स्टडीज़ के प्रमुख डेविड फ्रॉले ने सांची विश्वविद्यालय को बधाई देते हुए उम्मीद जताई कि सांची विश्वविद्यालय शोध एवं अध्ययन, अध्यापन के क्षेत्र में अलग मुकाम हासिल करेगा। उन्होने कहा कि दुनिया तनाव, ड्रग्स और हिंसा से जूझ रही है ऐसे में कल्याणकारी राज्य के लिए कर्मयोग आधारित शासनव्यवस्था उचित विकल्प हो सकती है। कार्यक्रम में इंटेक भोपाल चैप्टर के स्टेट पेट्रॉन श्री एम एम उपाध्याय भी मौजूद थे।

समापन सत्र में सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य प्रो यज्नेश्वर शास्त्री ने स्वागत भाषण देते हुए कॉन्फ्रेंस का ब्यौरा पेश किया। सम्मेलन में पधारे अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन देते हुए विश्वविद्यालय के कुलसचिव श्री राजेश गुप्ता ने तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में पधारे ज्ञान के शक्तिपुंजों और स्वर्णकलशों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। भोपाल में मध्य प्रदेश विज्ञान एवं तकनीकि परिषद(विज्ञान भवन) के सभागार में संपन्न हुए सम्मेलन में अमेरिका, थाइलैंड, म्यांमार,

कंबोडिया, कोरिया, चीन, ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका, जर्मनी, ब्रिटेन, श्रीलंका, बांग्लादेश, भूटान और नेपाल से दर्शन के करीब 200 विद्वान और चिंतकों ने हिस्सा लिया। सम्मेलन में 6 मुख्य सत्रों के साथ 14 तकनीकी सत्रों में करीब 150 शोध पत्र पेश किए गए। आज **"कर्तव्य एवं उत्तरदायित्व के निर्वहन में धर्म" तथा "धर्म के माध्यम से सतत विकास"** विषय पर चर्चा हुई। सम्मेलन में कई विश्वविद्यालयों के कुलपति, बौद्ध एवं भारतीय दर्शन के मनीषी, विद्वानों एवं दार्शनिकों के साथ देशभर से प्रतिनिधि शामिल हुए।

धर्म एवं राजव्यवस्था पर तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय धर्म-धम्म सम्मेलन संपन्न
13 देशों के करीब 200 प्रतिनिधियों ने की शिरकत
6 मुख्य सत्र, 14 तकनीकी सत्रों में करीब 150 शोध-पत्र पेश
माननीय मुख्यमंत्री ने किया उद्घाटन, राज्यपाल महोदय ने की समापन समारोह की अध्यक्षता